वाला; **तुल्यप्रियाप्रियः**=तथा प्रिय और अप्रिय में समभाव वाला; **धीरः**=धैर्य से युक्त; **तुल्यनिन्दात्मसंस्तुति**=अपनी निन्दा-स्तुति को समान समझता है; **मानापमानयोः तुल्यः**=मान और अपमान में समान दृष्टि वाला; **तुल्यः मित्र अरिपक्षयोः**= मित्र और शत्रु के पक्ष में भी समान; **सर्व**=सब; **आरम्भ**=उद्यमों का; **परित्यागी**= त्यागी है; **गुणातीतः**=माया के गुणों से अतीत (मुक्त); **सः**=वह; **उच्यते**= कहा जाता है।

अनुवाद

श्रीभगवान् ने कहा, जो पुरुष प्रकाश, प्रवृत्ति अथवा मोह की प्राप्ति होने पर न तो उनसे द्वेष करता है और न निवृत्त हो जाने पर उनकी इच्छा करता है; जो उदासीन की भाँति स्थित रहकर गुणों से विचलित नहीं होता तथा गुण ही कार्य कर रहे हैं, ऐसा जान कर स्थिर रहता है; जो सुख-दुःख को समान समझता है तथा मिट्टी, पत्थर और सोने को समान दृष्टि से देखता है; जो आत्म-स्वरूप में स्थित धीरपुरुष निन्दा-स्तुति, प्रिय-अप्रिय में समानभाव वाला है; जो मान-अपमान में सम है, मित्र और शत्रु से समान व्यवहार करता है तथा जिसने सब सकाम कर्मों का त्याग कर दिया है, वह गुणातीत कहा जाता है।।२२-२५।।

तात्पर्य

अर्जुन के तीनों प्रश्नों का भगवान् श्रीकृष्ण ने इन श्लोकों में क्रमशः उत्तर दिया है। सर्वप्रथम वे कहते हैं कि गुणातीत पुरुष न तो किसी से द्वेष करता है और न किसी वस्तु की इच्छा ही करता है। प्राकृत देहबद्ध जीवात्मा जब तक इस प्राकृत-जगत् में है तब तक वह माया के किसी न किसी गुण के आधीन रहता है। देह-मुक्ति होने पर ही वह मायाबन्धन से बाहर आता है। इसलिए यह आवश्यक है कि जब तक वह देह में रहे, उदासीनवत् रहे। उसे भगवद्भक्ति के परायण हो जाना चाहिए, जिससे देहात्मबुद्धि अपने-आप दूर हो जायगी। जब तक देहात्मबुद्धि है, तब तक वह केवल इन्द्रियतृप्ति में लगा रहता है। परन्तु जैसे ही चेतना श्रीकृष्ण के उन्मुख होती है, इन्द्रियतृप्ति स्वतः समाप्त हो जाती है। आत्मा को इस देह की अथवा इसके आदेश को मानने की अपेक्षा नहीं है। प्राकृत देह के गुण कार्य करते हैं, पर आत्मज्ञानी इन सब क्रियाओं से असंग रहता है। उसकी असंगता का कारण यह है कि वह न तो देह को भोगने की इच्छा करता है और न उसे त्यागने की ही इच्छा करता है। इस प्रकार शुद्धसत्त्व में स्थित होने से भक्त अपने-आप मुक्त हो जाता है; त्रिगुणमयी माया के प्रभाव से मुक्ति के लिये उसे प्रयास नहीं करना पड़ता।

अगली जिज्ञासा गुणातीत पुरुष के आचरण के सम्बन्ध में है। विषयी मनुष्य ही देह को प्राप्त होने वाले तथाकथित मान-अपमान से प्रभावित हुआ करते हैं; गुणातीत पुरुष पर तो इनका कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ता। वह कृष्णभावना सम्बन्धी स्वधर्म के आचरण में तत्पर रहता है, दूसरों से मिलने वाले मान-अपमान की चिन्ता नहीं करता। कृष्णभावना विषयक स्वधर्म के अनुकूल सब वस्तुओं को वह स्वीकार करता है;